

Padma Shri



DR. DHARMA NARAYAN BARMA

Dr. Dharma Narayan Barma is a retired School teacher of Nripendra Narayan Memorial Higher Secondary School, Tufanganj, Cooch Behar, West Bengal. He has dedicated his whole life to the reclamation of the lost glory of the Kamatapuri language and its magnificent history and its native speakers. He is known for his immense knowledge in the field of linguistic history of the Indian languages acquired in the process of unearthing his own mother tongue which was submerged in the passage of time due to political whims.

2. Born on 10th November, 1935, Dr. Dharma received his Master Degree in Sanskrit from Calcutta University in the year 1959. He served as teacher at Metropolitan Higher Secondary School, Calcutta. Later he returned to his native place at Cooch Behar and served at Nripendra Narayan Memorial High School until his retirement.

3. Dr. Barma was a founder member of Tufanganj Mahavidyalaya, affiliated to North Bengal University (presently under Panchanan University). He also played active part in founding a school at Tufanganj namely Baorkodali Higher Secondary School. He headed the movement for enlisting Cooch Behar Palace as Monument of National Importance in the year 1977 and consequently, the palace was declared as museum and given the status of National Importance. He acted as a member of District School Board, Cooch Behar for five consecutive years. He was the president of Maharaja Naranarayan Chila Ray Seva Trust and extended financial assistance to the needy Rajbanshi people for education, medical treatment and marriage. He is also the president of Raidak Magazine since 1972 which is published in Kamatapuri language.

4. Dr. Barma wrote historical novels namely "Maharaja Naranarayan" and "Maharaja Nilambar", rulers of Kamatapuri Kingdom. He penned a historical account on "Mahabir Chila Ray", a greatest warrior king of North-East India. He has also authored "A step to KamataBihari Language" in English to give a structural formation to the Kamatapuri Language for preserving its existence of ancient origin. He wrote "Kamata Bihari Bhasar Byakaranar Ruprekha", "Kamatapuri Bhasa Sahityer Ruprekha", "Kamatapuri Bhasa Prasanga", "Kamrup — Kamata Cooch behar Rajyer Itihash" (Co-authored with Mr. Dhaneshwar Manta), "Charjapada" (Buddhist religious songs in Kamrupi Maithili Language), "Aibhasa Kamatapuri Bhasa Commission 2011". He is disciple of Shri Shri Paramhangsha Naranarayan Tirtha Deva. He wrote two books on philosophical thoughts following his Guru's path namely "Paramartha Pothe Jigyasa" and "Paramartha Tattya" in Bengali. There are many other books on Kamatapuri language written by him.

5. Dr. Barma has received innumerable awards from different organizations and forums. He received an award from "Dainik Bangladesh Barta" from Mayampur, Bangladesh. He was conferred with Doctoral Degree from Global Peace University, California in the year 2019 for his lifetime contribution to his mother tongue. He also received award from Kshatriya Samity, Assam.



डॉ. धर्म नारायण बर्मा

डॉ. धर्म नारायण बर्मा पश्चिम बंगाल के नृपेन्द्र नारायण मेमोरियल हायर सेकेंडरी स्कूल, तूफानगंज, कूच बिहार के एक सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षक हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन कामतापुरी भाषा, उसके शानदार इतिहास और इस भाषा को बोलने वाले लोगों के विलुप्त गौरव की पुनर्स्थापना में लगा दिया। उन्हें राजनीतिक उतार-चढ़ाव की वजह से समय के साथ विलुप्त हुई अपनी मातृभाषा की खोजबीन के दौरान अर्जित भारतीय भाषाओं के इतिहास के विशद ज्ञान के लिए जाना जाता है।

2. 10 नवंबर, 1935 को जन्मे डॉ. बर्मा ने वर्ष 1959 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। पहले उन्होंने मेट्रोपॉलिटन हायर सेकेंडरी स्कूल, कलकत्ता में अध्यापक के रूप में कार्य किया। इसके बाद, वह अपने जन्म स्थान कूच बिहार वापस आ गए और वहां नृपेन्द्र नारायण मेमोरियल हायर सेकेंडरी स्कूल में अपनी सेवानिवृत्ति तक अध्यापन का कार्य करते रहे।

3. डॉ. बर्मा, नॉर्थ बंगाल विश्वविद्यालय (वर्तमान में पंचानन विश्वविद्यालय के अधीन) से संबद्ध तूफानगंज महाविद्यालय के एक संस्थापक सदस्य रहे हैं। उन्होंने तूफानगंज में बाओरकोडाली हायर सेकेंडरी स्कूल की स्थापना करने में भी सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने वर्ष 1977 में कूच बिहार पैलेस को एक राष्ट्रीय महत्व के स्मारक के रूप में सूचीबद्ध करने के लिए चलाए जा रहे आंदोलन की अगुवाई की, जिसके फलस्वरूप, उस पैलेस को एक संग्रहालय घोषित किया गया और उसे राष्ट्रीय महत्व का दर्जा प्रदान किया गया। उन्होंने लगातार पांच वर्ष तक डिस्ट्रिक्ट स्कूल बोर्ड, कूच बिहार के सदस्य के रूप में कार्य किया। वह महाराजा नरनारायण चिला राय सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष भी रहे और उन्होंने जरूरतमंद राजवंशी लोगों को शिक्षा, चिकित्सा और विवाह जैसे कार्यों के लिए वित्तीय सहायता भी प्रदान की। वह वर्ष 1972 तक कामतापुरी भाषा में प्रकाशित की जाने वाली रायदक पत्रिका के अध्यक्ष भी रहे।

4. डॉ. बर्मा ने कामतापुरी साम्राज्य के शासकों के बारे में "महाराजा नरनारायण" और "महाराजा नीलाम्बर" नामक ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के महा शूरवीर राजा "महाबीर चिला राय" के बारे में ऐतिहासिक लेख लिखा। उन्होंने कामतापुरी भाषा के प्राचीन उद्भव के प्रमाण संरक्षित रखने हेतु उसे एक संरचनात्मक रूप देने के लिए अंग्रेजी में "ए स्टेप टू कामताबिहारी लैंग्वेज" का भी लेखन किया। वह "कामताबिहारी भाषर व्याकरण रूपरेखा", "कामतापुरी भाषा साहित्य रूपरेखा", "कामतापुरी भाषा प्रसंग", "कामरूप-कामता कूचबिहार राज्य इतिहास" (श्री धनेश्वर मंता के साथ सह-लेखन), "चर्चापद" (कामरूपी मैथिली भाषा में बौद्ध धर्म गीत), "अए भाषा कामतापुरी भाषा कमीशन 2011" के भी प्रणेता थे। वह श्री श्रीपरमहंस नरनारायण तीर्थ देव के शिष्य हैं। उन्होंने अपने गुरु के पथ का अनुकरण करते हुए, बंगाली भाषा में दार्शनिक विचारों पर "परमार्थ पोथे जिज्ञाशा" और "परमार्थ तथ्य" नामक दो पुस्तकों की भी रचना की। उन्होंने कामतापुरी भाषा के बारे में अन्य पुस्तकें भी लिखी हैं।

5. डॉ. बर्मा को अलग-अलग संगठनों और मंचों से अनगिनत पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें म्यमपुर, बांग्लादेश के "दैनिक बांग्लादेश बार्ता" की ओर से भी पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव मिला है। उन्हें अपनी मातृभाषा के प्रति आजीवन योगदान देने के लिए वर्ष 2019 में ग्लोबल पीस यूनिवर्सिटी, कैलिफोर्निया की ओर से डॉक्टोरल की डिग्री से विभूषित किया गया। उन्हें क्षत्रिय समिति, असम की ओर से भी पुरस्कृत किया गया है।